व्याकरण सुधा

GRADE

6

1. भाषा, बोली, लिपि और व्याकरण
(Language, Dialect, Script and Grammar)

❐ अभ्यास

1. (क) भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचारों का आदान-प्रदान बोलकर या लिखकर करता है।

   (ख) जब मनुष्य लिखकर अपने विचार प्रकट करता है, तो उसे लिखित भाषा कहा जाता है। इसके अन्तर्गत लिखना एवं पढ़ना आता है। इस भाषा का प्रयोग पुस्तकों, पत्रों, समाचार-पत्रों एवं पत्रिकाओं आदि में किया जाता है।

   (ग) व्याकरण वह शास्त्र है, जो हमें भाषा के नियमों की जानकारी देता है और किसी भाषा को शुद्ध रूप से बोलना एवं लिखना सिखाता है।

   (घ) भाषा लिखने के लिए हम जिन चिह्नों का प्रयोग करते हैं, उसे लिपि कहते हैं।

भाषा		**लिपि**
मराठी, हिन्दी, संस्कृत	—	देवनागरी
पंजाबी	—	गुरुमुखी
अंग्रेजी, जर्मन, फ्रेंच	—	रोमन
इजरायली	—	हिब्रू
उर्दू	—	फ़ारसी

2. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✓
3. (क) लिपि (ख) साहित्य (ग) बोली (घ) व्याकरण (ङ) भाषा
4.

चित्रलिपि	—	चीनी
देवनागरी	—	मराठी, हिन्दी, संस्कृत
बांग्ला	—	बांग्ला
रोमन	—	अंग्रेजी, जर्मन, फ्रेंच
गुरुमुखी	—	पंजाबी
इजरायली	—	हिब्रू

5. यदि लिखित भाषा न होती तो हमारा लिखना एवं पढ़ना सम्भव न हो पाता। हमें मौखिक भाषा के सहारे कंठस्थ शिक्षा पर निर्भर रहना पड़ता।
6. हमारा राष्ट्रीय गान रवीन्द्रनाथ टैगोर और राष्ट्रीय गीत बंकिमचन्द्र चटर्जी ने लिखा था।
7. आधुनिक काल में खड़ी बोली का ही बोलबाला है यद्यपि ब्रज और अवधी बोली भक्तिकाल में साहित्य की प्रमुख भाषाएँ थीं लेकिन आजकल खड़ी बोली में ही साहित्य लिखा जा रहा है। यह गद्य एवं पद्य दोनों की ही प्रमुख भाषा है।
8. पंजाब में पंजाबी, बंगाल में बांग्ला, उड़ीसा में उड़िया, तमिलनाडु में तमिल, केरल में मलयालम, आन्ध्र प्रदेश में तेलुगू, कर्नाटक में कन्नड़, महाराष्ट्र में मराठी और गुजरात में गुजराती भाषा मुख्य रूप से बोली व लिखी जाती है।

9. हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय स्तर पर दिये जाने वाले प्रमुख पुरस्कार ज्ञानपीठ पुरस्कार, साहित्य अकादमी पुरस्कार, सरस्वती सम्मान और व्यास सम्मान हैं।
10. छात्र स्वयं करें।

❑

2. वर्ण-विचार (Phonology)

❑ अभ्यास

1. (क) स्वर वे वर्ण हैं, जो बिना किसी अन्य ध्वनि की सहायता के बोले जाते हैं। इनका उच्चारण करते समय हवा बिना किसी रुकावट के मुख से बाहर निकलती है। हिन्दी की वर्णमाला में कुल 11 स्वर हैं। ये हैं—अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ। स्वर तीन प्रकार के होते हैं—(क) ह्रस्व (ख) दीर्घ (ग) प्लुत।

   (ख) व्यंजन वे वर्ण होते हैं, जिनका उच्चारण करने के लिए स्वरों की सहायता लेनी पड़ती है। सभी व्यंजनों को अ सहित बोला जाता है। स्वर रहित व्यंजन दर्शाने के लिए व्यंजन के नीचे हलन्त (्) लगाया जाता है।

   (ग) जिन स्वरों का उच्चारण करने में ह्रस्व स्वरों से दुगना समय लगता है, वे दीर्घ स्वर कहलाते हैं। ये संख्या में 7 हैं—आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।
   जिन स्वरों को बोलने में कम समय लगता है। वे ह्रस्व स्वर कहलाते हैं। ये संख्या में चार होते हैं—अ, ई, उ, ऋ।

   (घ) अनुस्वार (ं) संयुक्त व्यंजन के रूप में अ रहित पंचमाक्षर (ङ्, ञ, ण्, न्, म्) जब अपने ही वर्ग के किसी व्यंजन से जुड़ता है, तो उसे अनुस्वार (ं) के रूप में लिखते हैं; जैसे—य, र, ल, व, श, ष, स, ह से पूर्व सम् उपसर्ग लगने पर म् के स्थान पर अनुस्वार (ं) ही लगता है; जैसे—संलग्न, संहार, संसार, संशय, संयोग, संरक्षक।
   अनुनासिक को चन्द्रबिन्दु भी कहते हैं। अनुनासिक (ँ) का उच्चारण नाक एवं मुँह दोनों की सहायता से किया जाता है; जैसे—चाँद, गाँव, दाँत आदि।

   (ङ) एक से अधिक व्यंजनों के मिलने से बने व्यंजन संयुक्त व्यंजन कहलाते हैं।
   1. क्ष = क् + ष् + अ = क्ष   क्षमा
   2. ज्ञ = ज् + ञ् + अ = ज्ञ   ज्ञानी

2. (क) 33   (ख) किसी की नहीं   (ग) 7
3. (क) अनजान   (ख) पवित्र   (ग) राहुल   (घ) चपल   (ङ) करतब
4. दयालु — द् + अ + य् + आ + ल् + उ
   रमन — र् + अ + म् + अ + न् + अ

झंडा — झ् + अ + न् + ड् + आ
भारत — भ् + आ + र् + अ + त् + अ
दोपहर — द् + ओ + प् + अ + ह् + अ + र् + अ

5. क्ष — क्षमा क्षण च्च — खच्चर सच्चा
त्र — त्रिकोण त्रिमूर्ति त्य — नित्य सत्य
ज्ञ — ज्ञानी ज्ञात न्म — जन्म आजन्म
ब्ब — बब्बर गब्बर स्त — अस्त अभ्यस्त
श्र — श्रम श्रमण क्क — शक्कर दिक्कत

6. र् — धर्म गर्व पर्व
र — राष्ट्र ट्रक ड्रम
र — क्रय क्रम भ्रम

7. ऋ = कृपा कृष कृतज्ञ
ओ = नोट वोट दोपहर
ऐ = पैसा जैसा वैसा
ऊ = दूध दूसरा धतूरा
इ = दिवस दिल गिनती

8. बास — बाँस सतरी — संतरी
चद्रमा — चंद्रमा धुध — धुंध
चादनी — चाँदनी अक — अंक
अतरिक्ष — अंतरिक्ष आनद — आनंद

9. यदि स्वरों की मात्राएँ न होती तो हम सार्थक शब्द नहीं बना सकते थे। ये व्याकरण की दृष्टि से त्रुटिपूर्ण होते।
10. छात्र स्वयं करें।
11. छात्र स्वयं करें।

❑

3. संधि (Joining)

❑ अभ्यास

1. (क) संधि एक ध्वन्यात्मक प्रक्रिया है। इसमें दो ध्वनियों अर्थात् दो वर्णों का मेल होता है। संधि से आशय है—मेल। जब पहले शब्द के अंतिम वर्ण एवं दूसरे शब्द के पहले वर्ण का मेल होता है, तो एक नये शब्द का निर्माण होता है। यह प्रक्रिया ही संधि कहलाती है; जैसे—देव + आलय = देवालय
अ + आ = आ
(अंतिम वर्ण) + (प्रथम वर्ण)

संधि के तीन भेद या प्रकार हैं—

1. स्वर संधि 2. व्यंजन संधि 3. विसर्ग संधि

(ख) जिस प्रकार दो वर्णों का मेल संधि कहलाता है, उसी प्रकार संधि हुए शब्द को अलग-अलग मूल रूप में करने को संधि-विच्छेद कहते हैं; जैसे—
सूर्यास्त — सूर्य + अस्त

(ग) जब कोई व्यंजन अन्य व्यंजन अथवा स्वर से मिले इस प्रकार दोनों के मेल से जो परिवर्तन हो, उसे व्यंजन संधि कहते हैं; जैसे—षट् + आनन = षडानन

(घ) विसर्ग के साथ स्वर अथवा व्यंजन के मेल से जो परिवर्तन होता है उसे विसर्ग संधि कहते हैं; जैसे—
नि: + आशा = निराशा (विसर्ग के स्थान पर र)

2.

भवसागर	प्रधानाध्यापक
कवींद्र	नदीश
देवेंद्र	सप्तर्षि
परमौज	प्रत्येक
पवित्र	नयन
अजन्त	संयोग
नीरोग	निश्छल

3.

महा	+	ओजस्वी
महा	+	ऋषि
महा	+	उत्सव
महा	+	इंद्र
देव	+	आत्मा
गिरि	+	ईश
लघु	+	ऊर्मि
वधू	+	उत्सव
सु	+	आगत
पितृ	+	अनुमति
पौ	+	अन
गै	+	अक

4. (क) विद्यालय (ख) भावार्थ (ग) सुरेश (घ) सदैव (ङ) महर्षि

5. संधि दो शब्दों के मेल से जिस प्रकार बनती है और एक नया शब्द बनाती है, उसी तरह दूसरे व्यक्ति के मेल से एक नये सम्बन्ध का उदय कर सकते हैं। आशय यह है कि मेल-जोल की प्रवृत्ति से अपने जीवन को सँवार सकते हैं जिससे समय पर सभी की सहायता और आशीर्वाद प्राप्त हो सके।

❑

4. समास
(Compound)

❒ अभ्यास

1. (क) दो या दो से अधिक शब्दों को मिलाकर संक्षिप्त करने की प्रक्रिया को समास कहा जाता है; जैसे—मुरली को धारण करते हैं जो—मुरलीधर।

   (ख) समास की प्रक्रिया से बनने वाले शब्द को समस्तपद कहते हैं; जैसे—विद्यालय और चौराहा शब्द दो शब्दों के मेल से बने हैं, इन्हें समस्तपद कहते हैं। समस्तपद का पहला पद पूर्वपद तथा दूसरा उत्तरपद कहलाता है; जैसे—नवरात्र = नव + रात्र नौ रात का समूह। यहाँ नव पूर्वपद तथा रात्र उत्तरपद है।

   (ग) समास के भेद निम्नलिखित हैं—
   अव्ययीभाव, तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु, द्वंद्व एवं बहुव्रीहि।

   (घ) जिस समस्तपद (समास) का उत्तरपद प्रधान हो और पूर्वपद तथा उत्तरपद के मध्य विशेषण-विशेष्य या उपमान-उपमेय का सम्बन्ध हो, उसे कर्मधारय समास कहते हैं; जैसे—
   पीताम्बर — पीले वस्त्र

   (ङ) जिस समस्तपद का (समास) पूर्व पद संख्यावाची या संख्याबोधक हो, वह द्विगु समास कहलाता है; जैसे—
   त्रिकोण — तीन कोणों का समूह

2.

आजन्म	चौराहा
वनमानुस	जन्मांध
चौराहा	कमलनयन
सुख-दुख	मुरलीधर

3.

पेट भरकर	सत्य के लिए आग्रह
राधा और कृष्ण	पीले वस्त्र
सात ऋषियों का समाहार	जैसा समय हो
भारत का रत्न	नीला है जो कमल
हिम का आलय	नौ द्वीपों का समूह
बैल की गाड़ी	गंगा और यमुना
तीन नेत्र हैं जिसके	चद्र के समान मुख वाली या वाला

4. त्रिकोण   चौराहा   चारपाई   नवरत्न
   त्रिभुवन

5. जिस प्रकार से दो या अधिक शब्दों को मिलाकर संक्षिप्त करने की प्रक्रिया को समास कहते हैं उसी तरह अपने व्यक्तित्व को समेटकर हम उसमें दया, न्याय, सत्य, ईमानदारी और विवेक का समावेश कर सकते हैं। अहम का परित्याग कर सबके प्रति समता का भाव विकसित कर सकते हैं। ❒

5. उपसर्ग (Prefix)

❒ **अभ्यास**

1. (क) जो शब्दांश किसी शब्द से पहले जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन लाते हैं, वे उपसर्ग कहलाते हैं; जैसे—प्र + ख्यात = प्रख्यात
इसमें ख्यात मूल शब्द है इसमें प्र शब्दांश लगाने से नये शब्द प्रख्यात का निर्माण हुआ। इसमें प्र उपसर्ग है।
(ख) संस्कृत के उपसर्ग निम्नलिखित हैं—
अति, अप, अनु, अव और आ।

2.

स	सरस	बद	बदनाम
अध	अधपका	खुश	खुशनसीब
वि	विजय	अप	अपव्यय
बिन	बिनब्याहा	अभि	अभिलाषा

3.

प्रति + वाद	अप + कार
नि + डर	अनु + वाद
सह + कर्मी	अभि + यान

4. कुमार्ग आजन्म प्रतिदान सजग ❑

6. प्रत्यय (Suffix)

❒ **अभ्यास**

1. (क) जो शब्दांश किसी शब्द के अन्त में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन लाते हैं, वे प्रत्यय कहलाते हैं।
(ख) प्रत्यय के दो भेद होते हैं—1. कृत प्रत्यय 2. तद्धित प्रत्यय

2.

मददगार	यादगार
हँसोड़ा	भगोड़ा
लुभावना	सुहावना

3.

बिका + आऊ	लूट + एरा
कूड़ा + दान	ऊँचा + आई
मीठा + आस	गरम + ई
गुड़ + इया	सज + ईला
घट + आना	दगा + बाज

4. छात्र स्वयं करें। ❑

7. तत्सम और तद्भव शब्द
(Tatsam and Tadbhav Words)

❐ **अभ्यास**

1. (क) तत्सम शब्द तत् एवं सम दो शब्दों से मिलकर बना है। तत् का अर्थ है वह अर्थात् संस्कृत और सम का अर्थ है समान। अतएव तत्सम शब्द वे हैं जो संस्कृत के समान हैं अथवा संस्कृत जैसे हैं; जैसे—उत्साह, भाग्य, अवतार, क्लेश इत्यादि।

   (ख) तद्भव शब्द तत् + भव इन दोनों शब्दों के योग से बना है। तत् का अर्थ है वह और भव का अर्थ है उत्पन्न। अतएव तद्भव शब्द संस्कृत से उत्पन्न हुए हैं। ये तत्सम शब्दों के परिवर्तित एवं विकृत रूप हैं; जैसे—घर, काम, बहू, दूध, ओठ इत्यादि।

2. **तद्भव**

अस्तुति	कोयल
आसरा	कपूर
कछुआ	गाहक
काँटा	किवाड़
गाँठ	चमार

3. **तत्सम** **तत्सम**

अन्न	क्षेत्र
स्कन्ध	क्षत्रिय
नापित	क्षति
पर्यंक	नयन
तपस्वी	पौष
पंक्ति	घट

4. घड़ा पंछी परस जवान

❑

8. शब्द भंडार
(Vocabulary)

❐ **अभ्यास**

1. (क) एक शब्द के कुछ समान शब्द होते हैं, वे पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं; जैसे—अध्यापक के पर्यायवाची शब्द हैं—शिक्षक, गुरु, आचार्य।

   (ख) मधुसूदन, माधव, यदुनंदन, मुकंद।

2. (क) इंद्र — वासव, सुरपति, सुरेश
(ख) अंश — पक्ष, अंग, अवयव
(ग) जल — नीर, पानी, अंबु
(घ) चतुर — निपुण, पटु, नागर
(ङ) नदी — सरिता, तरंगिनी, तटिनी
(च) राजा — भूप, भूपति, सम्राट
(छ) प्रकाश — ज्योति, प्रकाश, आलोक
(ज) धनुष — धनु, कमान, चाप

3. (क) (iv) (ख) (iii) (ग) (i) (घ) (ii) (ङ) (v)

4. (क) समीर (ख) अहम (ग) नीरद (घ) प्रभा (ङ) तीर

❑

9. विलोम शब्द (Antonyms)

❑ अभ्यास

1. (क) परस्पर विपरीत अर्थ देने वाले शब्द विलोम शब्द कहलाते हैं।

(ख)

विलोम शब्द	**विलोम शब्द**
अनाहूत	सुधा
विज्ञ	चोटी
दुराग्रह	विरल
निरुत्साह	उपमान
उथला	अवनति
अनाहूत	अन्याय

2.

शब्द	**विलोम**
अल्पायु	दीर्घायु
आनंद	क्लेश
स्वामी	सेवक
सुगंध	दुर्गंध
उपकार	अनुपकार

3. (क) पराजय (ख) अभिशाप (ग) गुलाम (घ) दुर्भाग्य (ङ) बहुमुख

4. छात्र स्वयं करें।

❑

10. श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द
(Paironyms)

❐ **अभ्यास**

1. जो शब्द सुनने में समान लगते हैं लेकिन अर्थ में भिन्न होते हैं वे श्रुतिसम-भिन्नार्थक शब्द कहलाते हैं।
2. बदनामी — भलाई
   लोहा — अहित
   बिना कुल के — रोशनी
   व्याकुल — सूनसान
   नियम — दैत्य
   लाया गया — चाँद
3. जलज — कपट
   जलद — कपाट
   कोश — प्रसाद
   कोष — प्रासाद
   कृपण — आदि
   कृपाण — आदी
4. छात्र स्वयं करें।

❑

11. वाक्यांशों के लिए एक शब्द
(One Word Substitution)

❐ **अभ्यास**

1. भूतपूर्व — जिज्ञासा
   फिजूलखर्च — कृतघ्न
   निम्नलिखित — सार्वजनिक
   मृदुभाषी — शरणागत
   प्रवासी — रोमांचक
   निष्ठुर — दुर्व्यसनी
2. साथ में कार्य करने वाला
   जिस पर विश्वास किया जा सके
   गरीबों हेतु नि:शुल्क भोजन
   वह स्थान जहाँ सेना रुकती है

जो अवश्य ही घटित होने वाला हो
जो कृत्रिम वेश धारण कर लेता है
जो हमेशा रहने वाला हो
जो मृत्यु को जीत ले
जिसकी कोई सीमा ना हो
शक्ति के अनुसार

❑

12. संज्ञा (Noun)

❒ अभ्यास

1. (क) किसी वस्तु, व्यक्ति, प्राणी, स्थान तथा भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं; जैसे—सार्थक।
   (ख) जिस शब्द से किसी वस्तु, व्यक्ति आदि के गुण, दोष, अवस्था, स्वभाव, दशा आदि भावों का बोध हो, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे—दयालुता, मिठास आदि।
   (ग) जिस शब्द से किसी विशेष वस्तु व्यक्ति या स्थान का बोध हो, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे—किसान हल से खेत जोत रहा है।
   जिस शब्द से एक जाति की सभी वस्तुओं, प्राणियों, व्यक्तियों या स्थानों का बोध हो, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे—जवानी में स्वास्थ्य अच्छा रहता है।
   (घ) जिन संज्ञा शब्दों से किसी धातु, द्रव्य या पदार्थों का बोध होता है, उन्हें द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे—घी, तेल, दूध, सोना, चाँदी आदि।
   जिन संज्ञा शब्दों से किसी समुदाय या समूह का बोध होता है, उन्हें समुदायवाचक या समूहवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे—सेना, पार्टी, कक्षा, भीड़ आदि।
2. (क) जातिवाचक संज्ञा (ख) व्यक्तिवाचक संज्ञा (ग) व्यक्तिवाचक संज्ञा
   (घ) भाववाचक संज्ञा (ङ) भाववाचक संज्ञा
3. (क) धैर्य (ख) चढ़ाई (ग) वीरता
   (घ) कायरता (ङ) सुंदरता (च) मिठास
   (छ) भलाई
4. (क) हवा महल (ख) लोहे, बर्तन (ग) आकाश, बादल
   (घ) रेलगाड़ी, दिल्ली (ङ) प्रेमचंद (च) पिता
   (छ) होली
5. बालक वकील घोड़ा मनुष्य

6. जीत		पशुता
उड़ान		बुद्धिमानी
प्रभुता		हँसाई
अच्छाई		लिखाई

7. व्यक्तिवाचक	जातिवाचक	भाववाचक
नरेन्द्र मोदी	पेड़	अहंकार
अशोक	झूला	बुराई
कनाडा	कागज	भोलापन
केरल	घास	कठिनाई
चेतक	दूध	उतार

8. छात्र स्वयं करें।

❑

13. लिंग एवं वचन (Gender and Number)

❑ अभ्यास

1. (क) शब्द के जिस रूप से उसके पुरुष या स्त्री जाति होने का पता चले उसे लिंग कहते हैं।
   (ख) स्त्री जाति का बोध कराने वाले शब्द स्त्रीलिंग कहलाते हैं; जैसे—बत्तख, मम्मी, नदी।
   पुरुष जाति का बोध कराने वाले शब्द पुल्लिग कहलाते हैं; जैसे—शेर, सुनार, कुम्हार।
   (ग) शब्द के जिस रूप से उसके एक या अनेक होने का बोध हो, उसे वचन कहते हैं। वचन के दो भेद हैं—1. एकवचन 2. बहुवचन
   (घ) शब्द के जिस रूप से उसके एक होने का बोध हो, उसे एकवचन कहते हैं; जैसे—रोटी, कोयल, कुर्सी।
   शब्द के जिस रूप से उसके एक से अधिक होने का बोध हो, उसे बहुवचन कहते हैं; जैसे—रोटियाँ, कोयलें, कुर्सियाँ।
   (ङ) पृथ्वी, आकाश और ब्रह्माण्ड का प्रयोग सदैव एकवचन में होता है।
2. (क) शिक्षिका ने छात्रा को पाठ समझाया।
   (ख) कुम्हारन ने बर्तन बनाये।
   (ग) शेर को देखते ही बैल भाग गया।
   (घ) नौकर कपड़े धो रहा है।
   (ङ) भैंसा चर रहा है।

3. स्त्रीलिंग स्त्रीलिंग स्त्रीलिंग
   पुल्लिग पुल्लिग पुल्लिग
   स्त्रीलिंग स्त्रीलिंग स्त्रीलिंग
   पुल्लिग पुल्लिग स्त्रीलिंग
4. (क) लड़के सामान खरीद रहे हैं।
   (ख) हमने मोबाइल खरीदे।
   (ग) नानियों ने हमें कहानियाँ सुनाईं।
   (घ) पेड़ों पर आम लगे हैं।
   (ङ) घोड़ियाँ घास चर रही हैं।
5. (क) राम ने रावण के साथ युद्ध किया।
   (ख) बुआ हमारे घर आ रही हैं।
   (ग) चावल पक गये।
   (घ) उसकी नौकरी अभी-अभी लगी है।
   (ङ) डॉ० राजेन्द्र प्रसाद देश के प्रथम राष्ट्रपति थे।
6. राजा कहारन
   मालन ठाकुर
   धोबन पंडिताइन
   आचार्या युवती
   नेत्री कवयित्री
7. (क) अध्यापक (ख) अभिनेत्री (ग) दर्जी
   (घ) दीवार (ङ) कवि (च) मछलियाँ
8.

पुल्लिग	**स्त्रीलिंग**
कुम्हार	कुम्हारन
धोबी	धोबन
कहार	कहारन
माली	मालन
लुहार	लुहारन

9. छात्र स्वयं करें।

❑

14. कारक (Case)

❒ अभ्यास

1. (क) संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका सम्बन्ध वाक्य के अन्य शब्दों से जाना जाता है, वह कारक कहलाता है। ये सम्बन्ध ने, को, से, के लिए आदि चिह्नों से स्थापित किया जाता है; जैसे—राम ने रावण को मारा।
   वाक्य में ने कारक है।

(ख) कारक के आठ भेद हैं—

	कारक	विभक्ति	लक्षण	उदाहरण
1.	कर्ता	ने	जो काम करता है	अर्पित ने पुस्तक पढ़ी। निखिल पुस्तक पढ़ता है।
2.	कर्म	को	जिस पर क्रिया का फल पड़े	बच्चे को भोजन दो। बच्चा खाना खा रहा है।
3.	करण	से/ के द्वारा	जिस साधन द्वारा काम हो	राम साइकिल से स्कूल जाता है।
4.	संप्रदान	को/के लिए	जिसके लिए काम किया जाए	मैंने अनुज के लिए उपहार खरीदा।
5.	अपादान	से (अलग होना)	जिससे कोई वस्तु अलग हो	पेड़ से फल गिरे।
6.	संबंध	का/के/की/रा/रे/री	जो दो शब्दों का सम्बन्ध जोड़े	वंशिका की बहन मेरी सहेली है।
7.	अधिकरण	में/पर	जिसमें/जिस पर कर्ता काम करे	मेज पर पुस्तक रखी है।
8.	संबोधन	हे/अरे/ओ	जिससे किसी को बुलाया जाए	अरे! आपको कोई बुला रहा है?

2. (क) (✗) (ख) (✗) (ग) (✓) (घ) (✓) (ङ) (✓)
3. (क) से (ख) पर (ग) से (घ) ने (ङ) को
4. (क) घर <u>में</u> पानी भरा है।
   (ख) <u>मैं</u> हँस पड़ा।
   (ग) चूहा बिल <u>में</u> बैठा है।
   (घ) यह पेन <u>उसको</u> दे दो।
   (ङ) अद्‌भुत ने माँ <u>से</u> पूछा।
5. (क) यह पुस्तक मुक्ता को दे दो।
   (ख) निकिता की मम्मी विद्यालय में पढ़ाती है।
   (ग) बच्चा सीढ़ी से गिर पड़ा।
   (घ) मेरे घर में नौ प्राणी हैं।
   (ङ) नेताजी ने लोगों को भाषण दिया।
   (च) पापा स्कूटर से ऑफिस गये।

6. (क) सम्बन्ध   करण
(ख) अधिकरण
(ग) कर्ता   अधिकरण
(घ) संबंध   संप्रदान
(ङ) संबोधन   अधिकरण
(च) अधिकरण
(छ) अपादान
(ज) कर्ता

7.

कर्ता	—	ने	कर्म	—	को
करण	—	से	संप्रदान	—	को/के लिए
अपादान	—	से (अलग होना)	अधिकरण	—	में/पर

8. छात्र स्वयं करें।

❑

15. सर्वनाम (Pronoun)

❐ अभ्यास

1. (क) जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयोग में लाये जाते हैं, उन्हें **सर्वनाम** कहते हैं; जैसे मैं, तुम, हम आदि।
(ख) सर्वनाम 6 प्रकार के होते हैं—पुरुषवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, प्रश्नवाचक, निजवाचक, संबंधवाचक
(ग) जो सर्वनाम शब्द किसी निश्चित वस्तु या व्यक्ति की ओर संकेत करते हैं, वे निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। इसे कहीं-कहीं संकेतवाचक सर्वनाम भी कहा जाता है; जैसे—
(i) वह हमारा विद्यालय है।
(ii) यह किसकी पुस्तक है?
जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग किसी अनिश्चित वस्तु या व्यक्ति के लिए किया जाता है, वे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे—
(i) दरवाजे पर कोई खड़ा है।
(ii) मुझे कुछ खाने को दो, भूख लगी है।
(घ) जिन शब्दों का प्रयोग वाक्य के दो उपवाक्यों को जोड़ने एवं संबंध बताने हेतु किया जाता है, वे संबंधबोधक सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे—
जो परिश्रम करता है, वह सफल होता है।

2. (क) मेरा   (ख) उसे   (ग) कोई   (घ) इस
(ङ) वह

3. (क) स्वयं (ख) किसके (ग) वह (घ) उसे
(ङ) आप (च) कुछ
4. (क) कहाँ प्रश्नवाचक (ख) वह निश्चयवाचक
(ग) वह निश्चयवाचक (घ) वह निश्चयवाचक
(ङ) तुम पुरुषवाचक
5. (क) उसे बहुत नाम करना है।
(ख) आप मुझसे क्या चाह रहे हैं?
(ग) यह पेन किसका है?
(घ) उसका सब कुछ लुट गया।
(ङ) पानी में कुछ गिर गया।
6. उसे उसे उसे उसके उसकी जिसका वह वह
7. (क) आप बहुत सज्जन व्यक्ति हैं।
(ख) तुम अच्छी गायिका बन सकती हो।
(ग) कौन आया है?
(घ) किसने पत्थर मारा।
(ङ) उसके बारे में कुछ नहीं पता।
(च) तुम्हारे लिखे गीत शानदार हैं।
(छ) जिन्होंने हमें यहाँ बुलाया है।
(ज) वह बहुत खूबसूरत हैं।
8. छात्र स्वयं करें।

❑

16. विशेषण (Adjective)

❒ अभ्यास

1. (क) जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहा जाता है।
(ख) विशेषण जिस शब्द की विशेषता बताते हैं उन्हें विशेष्य कहते हैं।
(ग) जो विशेषण शब्द अपने विशेष्य की निश्चित या अनिश्चित संख्या बताते हैं, उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं; जैसे—
(i) पेड़ पर दो बंदर हैं।
(ii) इसमें बारह पेंसिल हैं।
जो विशेषण शब्द अपने विशेष्य के माप, तोल एवं परिमाण की जानकारी देते हैं, उन्हें परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं; जैसे—
मम्मी दो किलो आम लाई।
मुझे पाँच मीटर कपड़ा चाहिए।

(घ) जो विशेषण शब्द अपने विशेष्य के गुण, दोष, आकार, दशा, स्वाद, काल, गंध, अवस्था का बोध कराते हैं, उन्हें गुणवाचक विशेषण कहते हैं; जैसे—
(i) टोकरी में ताजे फल हैं।
(ii) छोटा बच्चा खेल रहा है।

2. (क) (✓) (ख) (✗) (ग) (✗) (घ) (✓) (ङ) (✓)

3. (क) चचेरे (ख) हिंसक, जंगली (ग) शारीरिक, बलशाली
(घ) ऐतिहासिक (ङ) शैक्षिक, ज्ञानवर्धक

4. (क) नटखट — गुणवाचक विशेषण
(ख) लम्बा — गुणवाचक विशेषण
(ग) तीन किलो — परिमाणवाचक विशेषण
(घ) मीठे व रसीले — गुणवाचक विशेषण
(ङ) बहुत अच्छी — प्रविशेषण

5.

विशेषण	**विशेषण**
कृपालु	ऐसा
धनी	घरेलू
दयालु	सब्जीवाला
ईर्ष्यालु	पथरीला
लड़ाकू	आर्थिक
प्यासा	वैज्ञानिक
आलसी	सामाजिक

6. (क) यह जींस अच्छी है।
(ख) यह सब्जी बड़ी मजेदार है।
(ग) यह गली बहुत संकरी सी है।
(घ) तुम्हारे बायें हाथ में चोट कैसे लगी?

7. (क) गहरा (ख) अच्छी (ग) प्रभावशाली
(घ) काले (ङ) कँटीली

8. छात्र स्वयं करें। ❑

17. क्रिया (Verb)

❒ अभ्यास

1. (क) जिस शब्द से किसी काम के करने या होने का बोध होता है, उसे क्रिया कहते हैं; जैसे—
1. दो खिलाड़ी हॉकी खेल रहे हैं। 2. माली पौधों को सींच रहा है।
इन वाक्यों में खेलना और सींचना क्रियाएँ हैं।

(ख) जिस क्रिया में कर्म नहीं होता, वह अकर्मक क्रिया कहलाती है; जैसे—

1. नीति नाचती है। 2. पक्षी उड़ रहे हैं।

इन दोनों क्रियाओं में क्रिया का फल सीधे कर्ता पर पड़ रहा है, कर्म पर नहीं। इन क्रियाओं में कोई कर्म नहीं है। इसलिए ये अकर्मक क्रियाएँ हैं।

जिस क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है अर्थात् जिस क्रिया का कर्म होता है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे—

1. टोकरी में फल रखे हैं। 2. रुचि कविता सुना रही है।

इन वाक्यों में रखे हैं तथा सुना रही हैं और इन क्रियाओं का फल कर्म अर्थात् फल और कविता पर पड़ रहा है। ये दोनों रखे हैं, सुना रही है क्रियाओं के कर्म हैं। अत: ये सकर्मक क्रियाएँ हैं।

(ग) जहाँ कर्ता स्वयं काम न करके किसी अन्य से काम करवाता है, वहाँ प्रेरणार्थक क्रिया होती है। **उदाहरण**—मम्मी ने आया से बर्तन धुलवाए। अत: धुलवाए प्रेरणार्थक क्रिया है।

(घ) जिस शब्द से किसी कार्य के करने या होने का बोध हो, उसे क्रिया कहते हैं। इसी प्रकार क्रिया के होने वाले समय को जो निर्धारित करे, उसे काल कहते हैं।

(i) अवनी गाना गा रही है। (वर्तमान काल)

(ii) अवनी ने गाना गाया। (भूतकाल)

(iii) अवनी गाना गायेगी। (भविष्यत् काल)

(ङ) काल के तीन प्रकार होते हैं—

1. वर्तमान काल 2. भूतकाल 3. भविष्यत् काल

2. <u>पड़ा</u> सकर्मक क्रिया
<u>दौड़ता</u> सकर्मक क्रिया
<u>खाया</u> सकर्मक क्रिया
<u>छुट्टी</u> अकर्मक क्रिया
<u>जागता</u> अकर्मक क्रिया
<u>घूमने</u> सकर्मक क्रिया

3. (क) खरीदे (ख) तैर रहे हैं (ग) रहते हैं
(घ) है (ङ) जीतेगा (च) मारा

4. (क) भूतकाल (ख) वर्तमान काल (ग) भविष्यत् काल
(घ) वर्तमान काल (ङ) भूतकाल (च) भूतकाल
(च) भविष्यत् काल

5. (क) तुम तेज दौड़ते हो।
(ख) मुझे बुखार हो गया।
(ग) वह कल नई जींस खरीदेगा।

(घ) सूर्य प्रतिदिन पूर्व से निकलता है।
(ङ) सावन का महीना आयेगा।

6.

वर्तमान काल	भूतकाल	भविष्यत् काल
पिताजी टीवी देख रहे हैं।	पिताजी टीवी देख रहे थे।	पिताजी टीवी देखेंगे।
शुचि कविता सुना रही है।	शुचि ने एक कविता सुनायी।	शुचि एक कविता सुनायेगी।
किसान खेत में बीज बो रहा है।	किसान ने खेत में बीज बोया।	किसान खेत में बीज बोएगा।

7. (क) मचाया (ख) गिरते हैं (ग) बुलाया (घ) देख रहे हैं
(ङ) टूट गई
8. छात्र स्वयं करें।

❑

18. अव्यय
(Indeclinable Words)

❑ अभ्यास

1. (क) जो शब्द हर परिस्थिति में एक समान रहते हैं तथा जिनका रूप कभी नहीं बदलता, उन्हें अव्यय या अविकारी शब्द कहते हैं।
अव्यय के पाँच भेद हैं—क्रियाविशेषण, सम्बन्धबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक, निपात।

(ख) जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं जबकि जो अविकारी शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं तथा उसके बारे में जानकारी देते हैं, उन्हें क्रियाविशेषण कहते हैं; जैसे—(क) आज वर्षा बहुत हुई। (ख) एकाएक गाड़ी सामने आ गई। (ग) सुमेधा बाहर खड़ी है। (घ) अनामिका प्रतिदिन नृत्य का अभ्यास करती है।
ऊपर लिखे वाक्यों में रेखांकित शब्द बता रहे हैं कि क्रिया कितनी, कैसे, कहाँ और कब हुई। ऐसे शब्द क्रियाविशेषण कहलाते हैं।

(ग) जो अविकारी शब्द क्रिया के होने का समय बताते हैं, उन्हें कालवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं; जैसे—
(i) मैं कभी-कभी घूमने जाता हूँ।
(ii) दादाजी प्रतिदिन योगासन करते हैं।

इन वाक्यों में कभी-कभी, प्रतिदिन शब्द क्रिया के काल की विशेषता बता रहे हैं। अतएव ये कालवाचक क्रियाविशेषण हैं।

(घ) दो या दो से अधिक शब्दों, वाक्यांशों तथा वाक्यों को जोड़ने वाले अविकारी शब्द समुच्चयबोधक कहलाते हैं।

कुछ समुच्चयबोधक शब्द निम्नलिखित हैं—

किन्तु, परन्तु, लेकिन, क्योंकि, कि, इसलिए आदि।

2. (क) क्रियाविशेषण (ख) संबंधबोधक (ग) संबंधबोधक (घ) क्रियाविशेषण
(ङ) संबंधबोधक (च) क्रियाविशेषण (छ) संबंधबोधक (ज) क्रियाविशेषण

3. (क) रोज — कालवाचक क्रियाविशेषण
(ख) बायीं — स्थानवाचक क्रियाविशेषण
(ग) झटपट — रीतिवाचक क्रियाविशेषण
(घ) एकाएक — रीतिवाचक क्रियाविशेषण
(ङ) बहुत — परिमाणवाचक क्रियाविशेषण
(च) तेज — रीतिवाचक क्रियाविशेषण
(छ) बहुत — परिमाणवाचक क्रियाविशेषण

4. (क) बहुत (ख) यहाँ (ग) तेज (घ) आज, कल

5. (क) प्रेमपूर्वक (ख) एकाएक (ग) इतना (घ) जरा
(ङ) मूसलाधार

6. (क) हमारे घर के अन्दर नीम का पेड़ है।
(ख) स्कूल जाने से पूर्व नहा लेना चाहिए।
(ग) मेरे घर के आगे परचून की दुकान है।
(घ) मैं राखी के बाद स्कूल से आया।
(ङ) मेरे घर के पीछे बाग है।

7. (क) लेकिन (ख) वरना (ग) परंतु (घ) या

8. (क) केवल (ख) भी (ग) मात्र (घ) ही
(ङ) तो

9. (क) हाय! (ख) छि:! (ग) अहा! (घ) बाप रे बाप!
(ङ) शाबाश!

10. (क) दाएँ-बाएँ — स्थानवाचक क्रियाविशेषण
(ख) ऊपर — स्थानवाचक क्रियाविशेषण
(ग) कितना, कम — परिमाणवाचक क्रियाविशेषण
(घ) नियमपूर्वक — रीतिवाचक क्रियाविशेषण
(ङ) इधर-उधर — स्थानवाचक क्रियाविशेषण

19. विराम-चिह्न
(Punctuation)

❒ **अभ्यास**

1. सुभाषचन्द्र बोस एक मेधावी छात्र थे। उन्होंने छात्रावास में रहकर पढ़ाई की। वे आई०सी०एस० करके कलेक्टर बने लेकिन उन्होंने इससे त्यागपत्र दे दिया। उन्होंने 'दिल्ली चलो' का नारा दिया, वे आजाद हिन्द फौज के कमाण्डर थे।
2. | | | | |
   |---|---|---|---|
   | ० | लाघव चिह्न | , | अल्पविराम |
   | । | पूर्ण विराम | ( ) | कोष्ठक |
   | ? | प्रश्नवाचक चिह्न | ! | विस्मयादिबोधक चिह्न |
   | " " | उद्धरण चिह्न | ^ | हंस पद |
3. (क) 'कामायनी' की रचना 'जयशंकर प्रसाद' ने की।
   (ख) 'बाइबल' ईसाइयों की धार्मिक पुस्तक है।
   (ग) माँ ने कहा, "शिवम खाना खा लो।"
   (घ) गाँधीजी ने नारा दिया, "करो या मरो।"
4. (क) अपूर्व, उदय, मनुज और सार्थक मित्र हैं।
   मुझे भोजन में राजमा, कढ़ी और छोले पसंद हैं।
   (ख) डॉ० राजेन्द्र प्रसाद भारत के प्रथम राष्ट्रपति थे।
   डॉ० से दूर रहना है तो रोज एक सेब खाइये।
   (ग) हमें अपने माता-पिता का नाम रोशन करना चाहिए।
   विराट ने दिन-रात मेहनत करके यश कमाया है।
   (घ) आप यहाँ क्यों खड़े हैं?
   आप क्या खाना पसंद करेंगे?

❏

20. वर्तनी (Spelling)

❒ **अभ्यास**

1. | | |
   |---|---|
   | अनाथा | शिरोमणि |
   | अत्यधिक | उज्ज्वल |
   | विद्यार्थिगण | सशंक |
   | यथाविधि | जामाता |
   | अनिष्ट | संन्यासी |
2. | | | | |
   |---|---|---|---|
   | साहित्यिक | लँगोट | क्षेत्रम | उत्तम |
   | निर्दोष | पिशाची | | |

❏

21. मुहावरे (Idioms)

❐ अभ्यास

1. (क) जब कोई शब्द समूह या वाक्यांश निरन्तर प्रयोग के कारण सामान्य अर्थ न देकर विशेष अर्थ देने लगे तो वह मुहावरा कहलाता है। **उदाहरण**—आकाश से तारे तोड़कर लाना, इसका प्रयोग असम्भव काम करने के लिए किया जाता है।

   (ख) 1. **अँगूठा दिखाना**—साफ इंकार करना
   मुझे विश्वास था कि कठिन प्रश्न को हल करने में वनिता मेरी मदद करेगी पर जब मैंने उससे मदद माँगी तो उसने मुझे अँगूठा दिया।

   2. **अंग-अंग ढीला होना**—थक जाना
   पहाड़ी रास्ते पर चलते-चलते मेरा अंग-अंग ढीला हो गया।

   3. **अंगारे उगलना**—कठोर वचन कहना
   शहर में गंदगी देख मंत्रीजी आग उगलने लगे।

   4. **अंधे की लकड़ी**—एकमात्र सहारा
   बुढ़ापे में बच्चे ही माता-पिता के लिए अंधे की लकड़ी होते हैं।

   5. **अक्ल का दुश्मन**—मूर्ख
   मनुज से कोई समझदारी की उम्मीद न रखना। वह तो अक्ल का दुश्मन है।

2. (क) थानेदार के सामने कैदी 'भीगी बिल्ली' बनकर रहते हैं।

   (ख) अच्छे और ताकतवर आदमी के पीछे कुछ लोग हाथ धोकर पीछे पड़ जाते हैं।

   (ग) पुलिस को देख चोर 'नौ दो ग्यारह' हो गये।

   (घ) इंजीनियरिंग में दाखिला पाने के लिए मनीष ने 'आकाश-पाताल' एक कर दिया।

   (ङ) आकाश परीक्षा में प्रथम आने के लिए 'एड़ी चोटी का जोर' लगा रहा है।

   (च) भारत ने हमेशा 'ईंट का जवाब पत्थर' से दिया है।

   (छ) आजकल की इमारतें तो 'आसमान से बातें' करती हैं।

3. (क) **थक जाना**—पहाड़ी रास्ते पर चलते-चलते मेरा अंग-अंग ढीला हो गया।

   (ख) **मूर्ख**—मनुज से कोई समझदारी की उम्मीद न रखना। वह तो पूरा अक्ल का दुश्मन है।

   (ग) **अनुभवी होना**—उससे मत अटको उसने घाट-घाट का पानी पी रखा है।

   (घ) **लज्जित होना**—रंगे हाथों नकल करते हुए पकड़े जाने पर अनुज पानी-पानी हो गया।

   (ङ) **बुरा-भला कहना**—कुछ लोग छोटी सी गलती पर उलटी-सीधी सुनाने लगते हैं।

4. (क) (iv) (ख) (iii) (ग) (ii) (घ) (v) (ङ) (i) (च) (vi)

5. छात्र स्वयं करें।

❐

22. लोकोक्तियाँ (Proverbs)

❒ **अभ्यास**

1. (क) लोकोक्ति शब्द लोक एवं उक्ति शब्दों के संयोग या मेल से बना है, जिसका अर्थ है वे उक्तियाँ या कथन जो लोक अनुभव पर आधारित हों।
   (ख) लोकोक्तियों में लोक जीवन की अभिव्यक्ति होती है। ये पूर्ण वाक्य होती हैं। इनके प्रयोग से भाषा में सरसता, सजीवता और रोचकता उत्पन्न होती है।
2. (क) व्यक्ति अपने ही कार्यों का फल पाता है
   (ख) शक्तिशाली की ही जीत होती है
   (ग) झगड़े को समूल नष्ट कर देना
   (घ) सभी लगभग एकसमान
   (ङ) परिचितों की अपेक्षा अपरिचितों के मध्य अधिक सम्मान मिलता है।
   (च) सर्वथा अनुप्रयोग
3. (क) उलटा चोर कोतवाल को डाँटे
   (ख) अब पछताए होत क्या जब चिड़ियाँ चुग गई खेत
   (ग) नाच न जाने आँगन टेढ़ा
   (घ) एक हाथ से ताली नहीं बजती
   (ङ) लातों के भूत बातों से नहीं मानते
4. (क) (iii) (ख) (v) (ग) (i) (घ) (ii) (ङ) (iv)
5. छात्र स्वयं करें।

❑

23. अलंकार (Figures of Speech)

❒ **अभ्यास**

1. (क) काव्य की शोभा बढ़ाने वाले धर्म को अलंकार कहते हैं। अलंकार का शब्दार्थ होता है—आभूषण या गहना, आभूषण द्वारा शरीर को सजाया जाता है जिससे वह अधिक आकर्षक लगे। अलंकारों द्वारा भाषा में लालित्य एवं चमत्कार का समावेश होता है।
   (ख) जब एक ही अक्षर या कई व्यंजन वर्ण एक वाक्य में एक से अधिक बार आएँ तब अनुप्रास अलंकार होता है। **उदाहरण**—तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए। यहाँ त वर्ण की आवृत्ति एक से अधिक बार हुई है। अत: यहाँ अनुप्रास अलंकार है।

(ग) प्रतीप का अर्थ है—उल्टा या विपरीत। जहाँ बड़े को छोटा और छोटे को बड़ा बताया जाये। इसमें उपमेय को उपमान के समान न कहकर उलटकर उपमान को ही उपमेय कहा जाता है।

उदाहरण—नेत्र के समान कमल है।

गर्व करउ रघुनन्दन जिन मन माँह
देखउ आपनि मूरति सिय कै छाँह

(घ) जब हम किसी वस्तु का वर्णन करते समय उससे अधिक प्रसिद्ध किसी वस्तु से उसकी समानता करते हैं तब उपमा अलंकार होता है।

सागर सा गम्भीर हृदय हो, गिरि सा ऊँचा हो जिसका मन।

2. (क) श्लेष अलंकार है।
   (ख) काकु वक्रोक्ति अलंकार है।
   (ग) रूपक अलंकार है।
   (घ) उत्प्रेक्षा अलंकार है।

❑

24. मौखिक अभिव्यक्ति (Oral Expression)

❑ अभ्यास

1. छात्र स्वयं करें।
2. खेलों का हमारे जीवन में महत्त्व सदैव रहा है और यह निरन्तर बढ़ता जा रहा है। आज खेलों के माध्यम से दौलत, शोहरत और सम्मान पहले की अपेक्षा बहुत बढ़ गया है। क्रिकेट में आई०पी०एल० में खिलाड़ियों को करोड़ों रुपया मिल रहा है। कबड्डी, फुटबॉल, हॉकी में पहले से ज्यादा प्रायोजक और धन खिलाड़ियों को मिल रहे हैं। सरकार ओलम्पिक, एशियन और राष्ट्रमण्डल खेलों के पदक विजेता खिलाड़ियों को सरकारी अधिकारी और डी०एस०पी० तक बना रही है। करोड़ों रुपया, मकान, प्लाट और अन्य सुविधाएँ सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाएँ खिलाड़ियों को दे रही हैं। खिलाड़ियों को विज्ञापनों से अथाह धन प्राप्त हो रहा है। विराट कोहली, महेन्द्र सिंह धोनी और सचिन विश्व के धनवान खिलाड़ियों में हैं। खेलों से स्वास्थ्य अच्छा रहता है। हर कार्य में मन लगता है। व्यक्ति प्रसन्न रहकर हर कार्य लगन से करता है। शिक्षा संस्थानों से लेकर करियर के लिए खिलाड़ियों हेतु आरक्षण है।

❑

25. संदेश के आधुनिक साधन (Modern Means of Messaging)

❒ **अभ्यास**

1. साथियों, मेरे घर 25.9.2024 को रात्रि जागरण का आयोजन किया जा रहा है। आपकी उपस्थिति हमारे हर्ष का विषय होगी। आपकी प्रतीक्षा में

   आपका अमित

2. प्रिय अंकित,

   आपको दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ।

   दीपावली के उजाले की भाँति दीपावली आपके जीवन में उजाला लाये।

   आपका अमित

3. छात्र स्वयं करें।
4. छात्र स्वयं करें।

❑

26. डायरी लेखन (Diary Writing)

❒ **अभ्यास**

1. छात्र स्वयं करें।
2. छात्र स्वयं करें।

❑

27. निबंध लेखन (Essay Writing)

❒ **अभ्यास**

1. छात्र स्वयं करें।
2. छात्र स्वयं करें।

❑

28. अनुच्छेद-लेखन
(Paragraph-Writing)

❐ अभ्यास

संकेत बिन्दु : (पुस्तकों का महत्त्व, दृष्टिकोण का विकास, जीविका की प्राप्ति, विचारधारा)

(क) जीवन में पुस्तकों का बहुत महत्त्व है। पुस्तकों के माध्यम से व्यक्ति शिक्षित होता है और उसमें विवेक उत्पन्न होता है। उसकी एक विचारधारा बनती है। उसका परिवार और समाज के प्रति एक दृष्टिकोण विकसित होता है। पुस्तक के माध्यम से उसमें ज्ञान बढ़ता है जिससे वह किसी भी विषय पर अपने विचार प्रकट करता है। पुस्तकों के अध्ययन से ज्ञानवान बनकर सरकारी और गैर-सरकारी सेवाओं की प्राप्ति होती है। पुस्तकें ही वो जज्बा उत्पन्न करती हैं जिससे व्यक्ति समाज में नेतृत्व प्रदान करता है चाहे वो लेखन हो या सेवा हो या व्यवसाय हो। व्यक्ति समाज में नेतृत्व के लिए तैयार भी पुस्तकों के माध्यम से होता है वह साम्यवाद, समाजवाद और पूँजीवाद को जानकर उसी तरह की पार्टी में प्रवेश करता है या अपनी पार्टी बनाता है।

संकेत बिन्दु : (तीनों प्रारूपों में बेजोड़, साहसी और तेज तर्रार, सफल कप्तान व क्षेत्ररक्षक)

(ख) विराट कोहली मेरा प्रिय खिलाड़ी है। वह क्रिकेट के तीनों प्रारूपों टैस्ट मैच, एकदिवसीय मैच और टी-20 मैचों में लगभग समान रूप से बेजोड़ बल्लेबाज है। वह स्कोर चेज करने में बेजोड़ है। उसका साहस और तेज तर्रार अंदाज मुझे बहुत पसंद है। वह अपने रिकार्डों के लिए नहीं देश के लिए खेलता है। वह एकदिवसीय मैचों का अद्वितीय खिलाड़ी है। इसमें उसने 50 शतक लगाये हैं। टैस्ट मैचों में उसने 29 शतक लगाये हैं। वह एक सफल कप्तान भी है। इसके साथ वह गजब का क्षेत्ररक्षक है।

संकेत बिन्दु : (आदर्श समाज का निर्माण, ईमानदार नेतृत्व, भाईचारा, भ्रष्टाचार की समाप्ति)

(ग) ईमानदारी जीवन का सच्चा आभूषण है। यदि हम ईमानदार हैं तो समझो हमारा देश स्वयंमेव एक आदर्श समाज वाला देश बन जाएगा। ईमानदारी से व्यक्ति में सत्यता, कर्त्तव्यपरायणता, समय की पाबंदी और मानवता जैसे मूल्यों का स्वयंमेव विकास हो जाता है। ईमानदार व्यक्ति के हाथों में देश की बागडोर हो तो वह हर स्तर पर भ्रष्टाचार मिटाने का प्रयास करेगा। यदि देश का प्रत्येक व्यक्ति ईमानदार होगा तो सभी में भाईचारा और प्रसन्नता का वातावरण तैयार होगा। शिक्षक छात्रों में नैतिक मूल्यों को विकसित कर सकेगा। सरकार में भ्रष्टाचार नहीं होगा तो सरकारी कर्मचारी और नेतागण में धन का बंदरबाट नहीं होगा। जिससे जनकल्याण की योजनाएँ सुगमता से चलायी जा सकेगी और वंचितों को उनका अधिकार प्राप्त होगा। ईमानदार समाज में प्रत्येक को सपने देखने और उन्हें पूरा करने का हक हासिल होगा।

(घ) छात्र स्वयं करें।

(ङ) छात्र स्वयं करें।

❐